

हिंदी पदें

पद ५९

(राग: यमन – ताल: दादरा)

उसका ही भाल बड़ा है । नहिं बिधीको वरनन जाय ॥ध्रु. ॥ मानिक
नामका प्रताप । सुनो जो करे यह जाप । सोहि हुवा सुखरूप ।
उसकु मिला ब्रह्मरूप । वही पाया आपकु आप । उसकु देखत
धर्म भूप । होवे हृदय बीच काप । उसके सिरवकु भव सांप । नहिं
उसे जानो आप । उसके दर्शन त्रय ताप नसे । जारे सबहि पाप ।
क्या कहूँ रूप अनूप ॥१॥ माणिक चरननकी धूल । परी जिनके
शिरकमल । उसकु भई बपु भूल । चित्त भया बहु विमल । जन्म
भया तिनका सफल । उस गरे परी मुक्तमाल । टूटा संसृति जंजाल ।
गया मायामोहमल । उसकु बंदे सुरपाल । और कांपे वह काल ।
भये षड्रिपु येहि विकल । होते साधुजन सुखल । कहे मनोहर
गुरुबाल ॥२॥